भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

मध्य रीजनल ब्यूरो

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक : 1-5-2018

कसनूर और आयपेंटा शहीदों की स्मृति में प्रतिरोध सप्ताह पालन करें!
ओड़िशा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ के संघर्षरत इलाकों में 19-25 मई के बीच प्रतिरोध सप्ताह को पालन करें!
25 मई को आयोजित बंद को सफल करें!

प्रिय जनता,

2018 अप्रैल के आखरी सप्ताह दण्डकारण्य के आंदोलन के इतिहास में एक बेहद दुखद सप्ताह के रूप में जानी जाएगी। इस सप्ताह के 22 अप्रैल को छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के हल्बी तिमिरगुण्डा गांव के जंगल में महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले के सी-60 कमांडो पुलिस द्वारा 40 क्रांतिकारियों और आम जनता को बहुत ही निर्मम तरीके से हत्या की गयी। इनमें दक्षिण गढ़चिरोली डिविजनल कमेटी सचिव कामरेड श्रीनू (विजेन्द्र), डिविजनल कमेटी सदस्य कामरेड्स नंदू (वासुदेव आत्रम) और सायनाथ (डोलेश आत्रम), अहेरी एरिया कमेटी सचिव कामरेड लता (महरी वड्डे), दल कमांडर कामरेड शांति (मंगली पद्दा), कामरेड्स जमुना, ललिता, लिम्मी, चंद्राकला, राधा, रुकमति, क्रांति, जानकी, सोनी, पुष्पा, रेश्मा, अनिता, मंदा, जयशीला, कार्तिक, राजेश, प्रदीप, संदीप, नागेश, सन्नू, तिरुपति, अजय, विजय, संजय, श्रीकांत के साथ गट्टेपल्ली गांव के युवक-युवतियां 6 महिला, 2 पुरुष शामिल है। इनपर एक ही जगह पर गोलीबारी की गयी। इस गोलीबारी में घटनास्थल पर ही 5 कामरेड्स ने दम तोड़ दिया और घायल 11 साथियों में से 6 को लेकर खांदला-राजाराम जंगल में अतिरिक्त एस.पी. महेश्वर रेड्डी के टीम द्वारा गोली मार दी गयी। बाकी घायल साथियों की भी इसी तरह हत्या की गयी। 27 अप्रैल को बीजापुर जिले के आयपेंटा में और 8 कामरेडों को अपनी जान गवांनी पड़ी। 29 अप्रैल को सुकमा जिले के दूलोड़ गांव के पास एक महिला और एक पुरुष को पुलिस द्वारा अंजाम दिए गए एक फर्जी मुठभेड़ में अपनी जान गवांनी पड़ी। इन सभी साथियों की स्मृति में मध्य रीजनल ब्यूरो विनम्रतापूर्वक क्रांतिकारी जोहार अर्पित करती है। उनके अरमानों को पूरा करने के लिए और एक बार शपथ लेती है। जनता के लिए निश्वार्थ रूप से अपने अनमोल प्राणों को न्योछावर करने वाले उन क्रांतिकारियों और आम जनता के याद में पीएलजीए के नेतृत्व में 19-25 मई के बीच प्रतिरोध सप्ताह पालन करने सीआरबी आह्वान करती है।

केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व में एन.डी.ए. सरकार सत्ता में आने के चार वर्षों से माओवादी आंदोलन जारी रहनेवाली सभी राज्यों में पुलिस और अर्धसैनिक बलों को बड़े पैमाने पर तैनात कर विगत 8 सालों से जारी ग्रीन हंट के बाद, अभी 'समाधान' रणनीति के साथ बहुत ही आक्रामक रूप से पाशविक हमले कर रही है। सैकड़ो आम जनता की, दशियों संख्या में क्रांतिकारियों की हत्या की गयी है। इसके बावजूद, क्रांतिकारी आंदोलन न सिर्फ जारी रहा है, बल्कि अन्य इलाकों में विस्तार हो रहा है। इसे देखकर हर साल विशेष मिशन तैयार करते हुए सैनिक हमले तेज कर रही है। हेलिकॉप्टरों को व्यापक रूप से इस्तेमाल करते हुए विभिन्न तरीकों से हवाई हमले कर रही है। भारतीय वायुसेना और केन्द्रीय पुलिस बल, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के कमांडो बल मिलकर तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के सीमा पर पूजारी-कांकेर में अंजाम दिया गया हमला ही इसका सबूत है। मानवरहित टोही विमानों को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करते हुए हमले कर रहे हैं। समूचे जंगल इलाके में भी मोबाइल नेटवर्क मजबूत कर रहे हैं। इससे आगे चलकर गांवों में बेरोजगार लंपट युवाओं को, आंदोलन में जनता के हाथों सजा भुगतने वाले परिवारों के सदस्यों को, पुलिस परिवारों को और कबिलायी दबंग नेताओं को इकट्ठा कर पैसा और नौकरी का लालच दिखाकर, उनकी सुरक्षा के लिए पूरा भरोसा दिलाकर उन्हें मुखबिर बना रहे हैं। मुख्य रूप से उनके सूचनाओं पर निर्भर होकर हमले करते हुए पुलिस भारी हत्याकांडों को अंजाम दे रही है। मई 2017 में केन्द्र सरकार द्वारा दिल्ली में माओवादी इलाकों के पुलिस, सैनिक, नागरिक और न्याय विभागों के उच्च अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए 'समाधान' रणनीति तय की गयी थी। 2022 तक भारत को माओवादीरहित देश के रूप में तब्दील करने की समयसीमा रखी गयी थी। इसी का नतीजा है वर्तमान के हमलें। इन पाशविक हमलों का निंदा करते हुए, उन हमलों का प्रतिरोध करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में पूरी तरह खड़े होकर उसका बचाव करने हमारी पार्टी जनता को अपील करती है।

आंदोलन के इलाकों पर बढ़ते हमलों, हत्यकाण्डों, जेलों में बंदी साथियों को दी जाने वाली कठिन और लम्बी सजाओं तथा विश्वभर में तीखी होती जा रही आर्थिक संकट के बीच अविभाज्य संबंध है। देश और दुनिया में जारी संकट से उबरने के लिए शोषक-शासक वर्गों ने देश के प्राकृतिक संसाधनों को बड़े पैमाने पर लूटने की जल्दबाजी में हैं। केन्द्र और सभी

राज्य सरकारें एक-दूसरे से होड़ लगाते हुए देश के संसाधनों को बेचने के लिए देश-विदेशों में कम समय में कई बार भ्रमण कर रहे हैं। विभिन्न पूंजीवादी, साम्राज्यवादी सरकारों के साथ, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ दशियों संख्या में समझौतें कर रहे हैं। उन्हें वादे पर वादे करते हुए तुरंत परिणाम हासिल करने के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने पर व्यस्त हैं। बुनियादी ढांचा के परियोजनाओं को पूरा करने के लिए पुलिस बल को इस्तेमाल करते हुए जनता पर हमले तेज कर रहे हैं। शोषक-शासक वर्ग अपने द्वारा लिखित सभी कानूनों को तोड़कर नागरिक और जनवादी अधिकारों का हनन कर रहे हैं। आदिवासी इलाकों में पेसा और ग्रामसभा का नामो-निशान मिटा रहे हैं। दूसरी तरफ ''विकास... विकास...'' की मीठी-मीठी बातें करते हुए जनता के अंदर भ्रम फैला रहे हैं। इसमें मोदी और रमनसिंह, देवेन्द्र फड्नवीस, रघुवरदास, चंद्रबाबु नायडु, पिनारायी विजयन, नवीन पटनायक और चंद्रशेखरराव आगे हैं। देश में आसमान छूते दैनिक जरूरत के चीजों की कीमतें, तेजी से बढ़ती बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्याएं, भुखमरी, अत्याचार, भ्रष्टाचार के घोटाले - ऐसे बहुत सी समस्याएं मौजूद होने के बावजूद शासकों को परवाह नहीं है। वे जनता के कल्याण के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ शोषक वर्गों और संपन्न परिवारों के विकास पर ही ध्यान देते हैं।

इन जीवन-मरण समस्याओं से लोग एक तरफ जूझ रहे हैं, दूसरी तरफ देश में हिन्दूत्व शक्तियों के हमले बढ़ रहे हैं। विगत चार सालों में सैकड़ों की संख्या में हिन्दूत्व हमले हुए हैं, जिसमें कई मुसलमान, दलित और आदिवासी जनता को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है तथा उनकी संपत्ति नष्ट हुई है। समाज के सभी तबकों के लोग हिन्दूत्व के चपेट में आ रहे हैं। इसके बावजूद, शासकों ने उनके समस्याओं का निपटरा नहीं किया, उन्हें सिर्फ जनता की वोट की परवाह है।

देश में बढ़ती जनजागरूकता, जन आंदोलनों और जनवादी आंदोलनों के साथ क्रांतिकारी आंदोलन इन शोषकों के लूट के खेल उनके मर्जी से खेलने नहीं दे रहे हैं। लोग पहले के मुकाबले बहुत ज्यादा जुझारू रूप से लड़ रहे हैं। जनमुक्ति छापामार सेना जनता के साथ खड़ी है और दृढ़ता व समर्पण के साथ लड़ रही है। शोषक-शासक वर्गों के सभी जनविरोधी नीतियों का हमारे पार्टी समय-समय पर भण्डाफोड़ करते हुए जनता को गोलबंद कर आंदोलन कर रही है। खास तौर पर क्रांतिकारी आंदोलन के इलाकों में जनता अपने वैकल्पिक सरकारों का गठन करते हुए देश में नवजनवादी व्यवस्था के निर्माण के लिए आत्मबलिदान की चेतना और हिम्मत के साथ लड़ रही हैं।

आज देश के शोषित-उत्पीड़ित जनता का हमारी पार्टी पर विश्वास बढ़ रही है। इसलिए ही शोषक-शासक वर्ग हमारी पार्टी को सबसे खतरनाक शक्ति के रूप में देख रही है। जनता के मौलिक समस्याओं को 70 वर्ष बीतने के बाद भी निपटने में सरकारें एक तरफ विफल हुई हैं और दूसरी तरफ माओवादी क्रांतिकारियों का भौतिक रूप से सफाया करने पर तुली हुई हैं। समाज में जब तक शोषण और उत्पीड़न रहेंगे तब तक विभिन्न तरीकों में क्रांतिकारी आंदोलन जारी रहेगा। जनता जितने भी असमान आत्मबलिदान देने के लिए भी पीछे नहीं हटेगी। यह ऐतिहासिक तथ्य है। पुलिस के पैसे के लालच में क्रांतिकारियों के जानों के लिए खतरा बने गद्दारों को जनता कभी नहीं छोड़ेगी। इस अवसर पर हम क्रांतिकारी जनता को आह्वान करते हैं कि कसनूर और आयपेंटा के हत्याकांडों के खिलाफ विभिन्न तरीकों में सड़कों में उतर कर अपना विरोध दर्ज करें।

जनवादीप्रेमियों, पत्रकारों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और छात्र-नवजवानों,

अक्टूबर 2016 में ओड़िशा के रामगुड़ा में 31 कामरेडों को आंध्रप्रदेश ग्रेहाउण्ड्स पुलिस द्वारा हत्या किये जाने के खिलाफ आप सभी लोगों ने युद्ध-स्तर पर गोलबंद होकर तथ्यों को दुनिया के सामने लाये थे। आज उससे भी बड़े हत्याकांण्ड हो रहे हैं। हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) का आह्वान है कि इनपर आप फौरन तथ्यों का जांच-पड़ताल करने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए न्यायपूर्ण संघर्ष में आगे आएं। आप लोगों पर भी फासीवादी हमले हो रहे हैं। आप भी गिरफ्तारियों का शिकार हो रहे हैं और जमानत से वंचित रखकर आप को भी लम्बे समय तक सलाकों के पीछे रख रहे हैं। आप लोगों पर भी हमले कर हत्याएं कर रहे हैं। इसके बावजूद, आप लोगों पर हमारी पार्टी का पूरा विश्वास है कि आप लोग हिम्मत कर जनता और जन आंदोलनों के साथ दृढ़ता से खड़े रहेगें।

- ★ कसनूर और आयपेंटा शहीदों के स्मृति में 19-25 मई के बीच प्रतिरोध सप्ताह को पालन करें। 25 मई को बंद का आयोजन करें।
- ★ केन्द्र और राज्य सरकारों के साम्राज्यवाद-परस्त और जनविरोधी नीतियों का भण्डाफोड़ करें।
- ★ क्रांतिकारी, राष्ट्रीयमुक्ति और जनवादी आंदोलनों पर जारी राज्यहिंसा की भर्त्सना करें।
- ★ कसनूर और आयपेंटा के हत्याओं के पीछे के तथ्यों को उजागर कर हत्यारों को सजा दें।
- ★ कसनूर और आयपेंटा शहीदों के स्मृति में सभा-संगोष्टियों का आयोजन कर उनके बलिदानों को ऊंचा उठाएं। उनके अरमानों पूरा करने के लिए शपथ लें।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

प्रताप,

प्रवक्ता, मध्य रीजनल ब्यूरो,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

विश्व मजदूर दिवस, 2018